सम्यग्ज्ञान दीपिका

क्षुल्लक धर्मदास जी

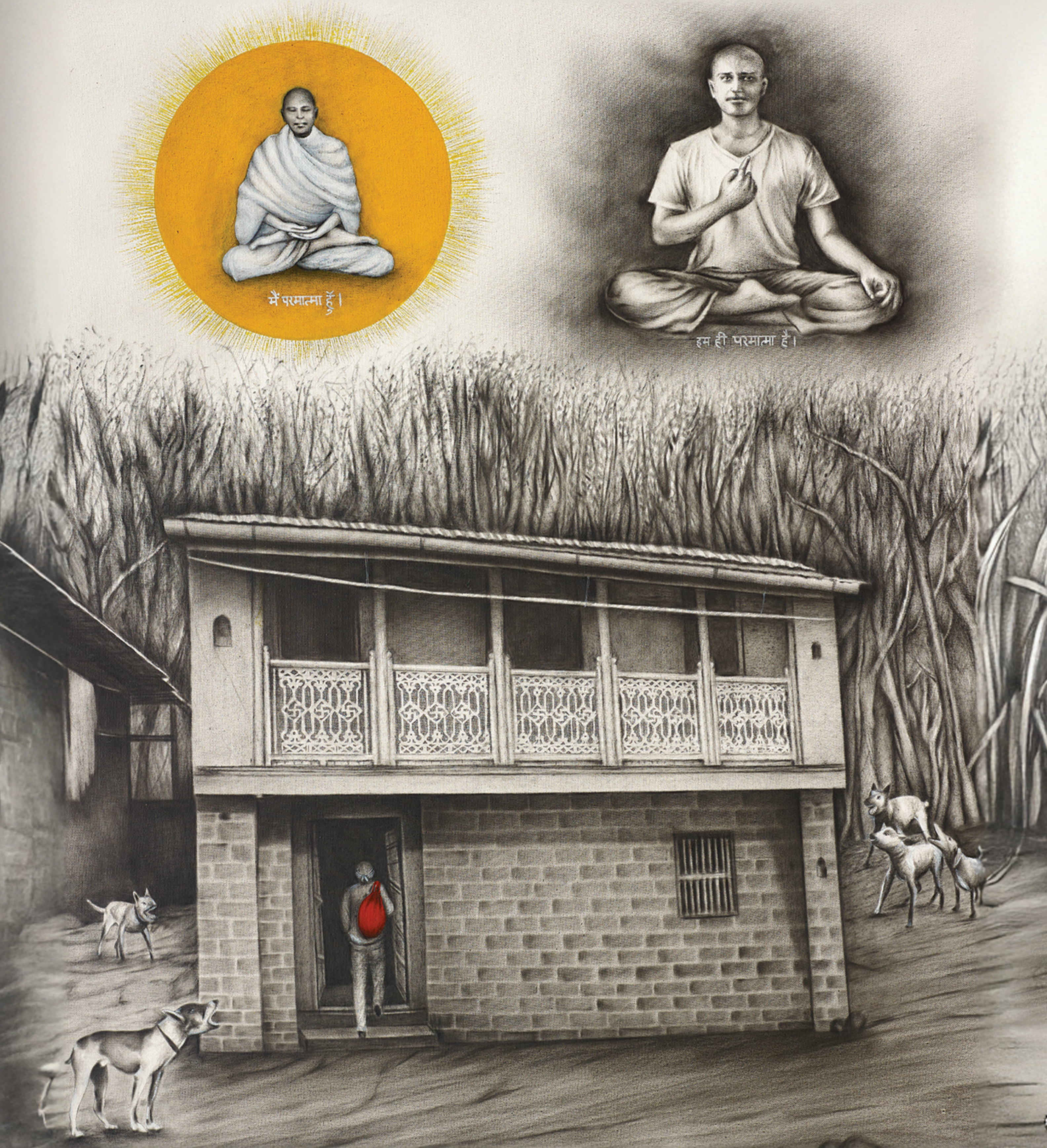

Exhibit

GURU KAHAN ART MUSEUM

www.gurukahanmuseum.org

Sponsor

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust

Organizer

PAINTERNET

www.painternet.com

By Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust, Mumbai

All rights reserved only with: Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust

302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West), Mumbai – 400056. INDIA

Tel No: +91 75068 27160, Tel: 022 26130824

Email: info@vitragvani.com, Web: www.vitragvani.com

No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system,

or transmitted, in any form or by means, electronic, mechanical, photocopying,

recording or otherwise, without the prior permission of the publishers.

Conceptualized by Nikhil Mehta & Rahul Jain

Design by Forestbell Design Solutions LLP

Photography by Mr. Vipul Patel

Edited & Visualized by Rahul Jain

ISBN No. 978-93-81057-57-5

Price: INR 500/- & 10$

अध्यात्मयुग सृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी

प्रकाशकीय

जैन दार्शनिक जगत में अनेकों ऐसे महान विद्वान हुए हैं, जिन्होंने आचार्य-भगवन्तों की दिव्यदेशना को अत्यंत सरल विधि से करोडों भव्यों के कंठ का हार बना दिया है। मानो जिनदेशना का सम्पूर्ण सार ही उनकी रचनाओं में आ गया हो, सरल शब्दों एवं गंभीर भाव पूर्वक अपनी आध्यात्मिक रचनाओं में अनेकान्त के बीज बोने वाले महान विद्वानों ने इस कलिकाल में अपूर्व कार्य किया है।

उन्हीं में से एक थे श्री क्षुल्लक धर्मदास जी। अपनी सरल एवं ज्ञानवर्धक रचनाओं से सबके परिणामों को निर्मल कर देने वाले क्षुल्लक जी की लेखनी से अनेकों गद्यों की रचना का कार्य सम्पन्न हुआ, जिनमें मुख्य है 'सम्यग्ज्ञान दीपिका' ग्रन्थ। इस ग्रंथ में आध्यात्मिक गद्य एवं चित्रों के माध्यम से आठ कर्मों की आगमानुकूल अवस्था, निमित्त-उपादान का स्वरूप तथा शुद्धात्म तत्त्व का समीचीन वर्णन स्वयं क्षुल्लक जी द्वारा ही चित्रों के माध्यम से किया गया है।

साथ ही आगे इसी पुस्तक के दूसरे विभाग में वैराग्य वर्षा पुस्तक पर आधारित पूर्व-आचार्यों एवं विद्वानों द्वारा लिखित वैराग्यमयी बोलों का संकलन किया गया, ताकि यह वैराग्यमयी तत्त्वज्ञान जन-जन के हृदय का विषय बन सके। आकार में छोटा और भावों में पर्वत के समान यह ग्रन्थ प्रत्येक मुमुक्षु के हृदय का विषय बनें, इसी पवित्र उद्देश्य के साथ श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई एवं गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ द्वारा इस ग्रंथ में आये हुये महत्त्वपूर्ण विषयों को चित्र का आकार देने का उत्तम कार्य किया गया है।

इस कार्य में अपनी सर्वोत्तम कला से इन चित्रों को बनाने का कार्य देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त चित्रकार श्री युवराज जी पाटिल (सम्यग्ज्ञान दीपिका) एवं श्री रियाज़ समाधान (वैराग्य वर्षा) द्वारा किया गया है। सभी जीव मूल तत्त्वज्ञान की गहराईयों को इन चित्रों के माध्यम से समझे और अपने बहुमूल्य मनुष्य भव को सफल करें, ऐसी मंगल भावना।

– नेमिष शाह,
ट्रस्टी: श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

सम्यग्ज्ञान दीपिका

Charcoal on Canvas | 24" x 30"

चित्रद्वार

द्वार के दोनों ओर पक्ष रूपी दो हाथ विकल्प रूपी दो भिन्न दिशाओं में संकेत दे रहे हैं, एक कहता है कि हे जीव यदि तुम दाई ओर जाओगे तो तुम्हें जीव अर्थात चैतन्य स्वभाव की प्राप्ति होगी और दूसरा कहता है कि यदि तुम बाई ओर जाओगे तो तुम्हें अजीव अर्थात जडत्व की प्राप्ति होगी परन्तु निश्चय से तो ये दोनों ही विकल्प हैं, भेद हैं और भेद के आश्रय से आत्मा का अनुभव नही हो सकता। इसीलिये हे भव्य! यदि तुम जीव-अजीव, ज्ञान-अज्ञान के विकल्प भेदों को छोडकर दोनों ही पक्षों का त्याग करोगे और अपने निज-स्वभाव का आश्रय कर सीधा प्रवेश करोगे तो तुम अपने अचल स्वभाव में स्थित हो जाओगे।

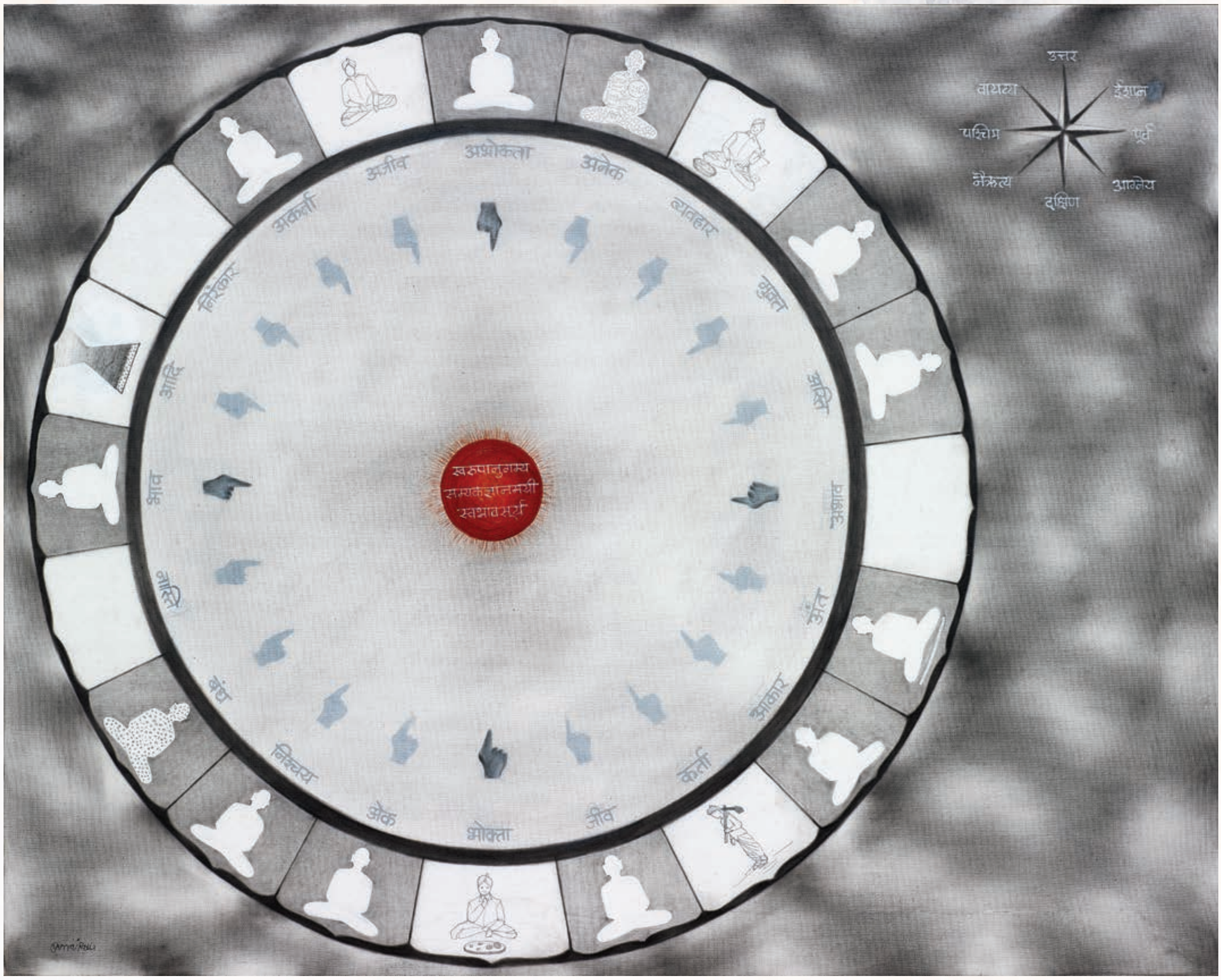

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

स्वभाव सूर्य

देखो! इस चित्र में दिखाया है कि प्रत्येक दृष्टि से वस्तु के विभिन्न पक्षों को जाना जा सकता है, कोई भी व्यक्ति किसी वस्तु को अपनी दिशा, दृष्टि कोण या स्थान के आधार पर देखता और समझता है। पूर्ववासी उसे पश्चिम में मानता है, अन्य का निषेध करता है; पश्चिमवासी पूर्व में कहता है, अन्य का निषेध करता है; दक्षिणवासी उत्तर में कहता है, अन्य का निषेध करता है और उत्तरवासी उसे दक्षिण में कहता है, अन्य का निषेध करता है इत्यादि एक ही वस्तु के संबंध में अनेक मत हो सकते हैं; होते हैं। लेकिन जैसे वस्तु का वास्तविक स्वरूप इनमें से किसी एक विशेष दिशा में सीमित नहीं होता, उसीप्रकार निश्चयालंबी व्यवहार का निषेध करता है और व्यवहारालंबी निश्चय का। परन्तु कोई उस वस्तु को कैसे मानता है यह वस्तु का स्वरूप निश्चित नही करता अपितु वह वस्तु वास्तव में कैसी है, उसके यथार्थ स्वरूप पर तय होता है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

ज्ञानावरणीय कर्म

ज्ञानावर्णी घातके, हुवो ज्ञान को ज्ञान।
धर्मदास क्षुल्लक कहे, जिन आगम परमान।।

जिसप्रकार आकाश में प्रकाशमान सूर्य बिना किसी की सहायता से स्व-पर दोनों को ही प्रकाशित कर रहा है। परन्तु यदि उसके आगे बादल आ जायें तो उसका प्रकाश भी छिप जाता है, तथा जिसप्रकार मन्दिर में विराजित मूर्ति को देख पाना सरल है परन्तु उसके आगे यदि मलमल का कपडा आ जाये तो उसे देखने में भी अस्पष्टता होती ही है। उसीप्रकार ज्ञानावरणीय कर्म भी मलमल के कपडे की भाँति सम्यग्ज्ञान के लिये एवं बादल की भाँति केवलज्ञान के लिये आवरण समान है। अतः स्पष्ट है कि यह कर्म जनित आवरण ही जीव की अज्ञानता का निमित्त कारण है।

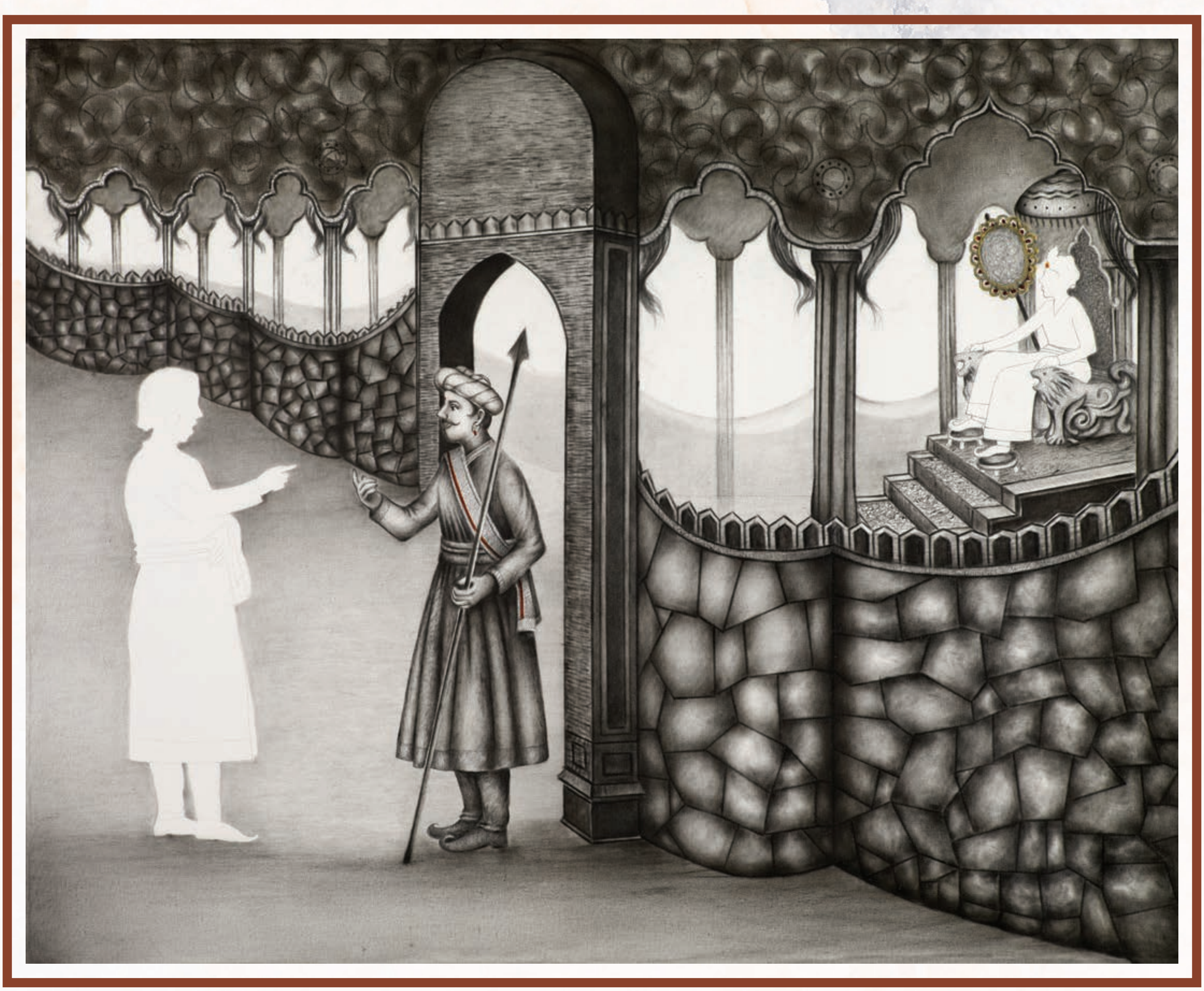

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

दर्शनावरणीय कर्म

ज्ञानभानु जिनराज, सर्व जगत के ऊपरे।
धर्मदास कहै सार, सो ही सुखको काज है।।

जिसप्रकार किले में जाने की सामर्थ्य व्यक्ति में अवश्य ही है परन्तु पहरेदार उसके शक्तिवान होते हुए भी उसे अन्दर नही जाने देता, उसे बाहर ही रोक लेता है उसीप्रकार जीव में सम्पूर्ण देखने की सामर्थ्य होते हुए भी दर्शनावरणीय कर्म के निमित्त से पहरेदार की भाँति उसे वस्तु के सम्पूर्ण देखने-जानने में आवरण बन जाता है, देखने नही देता।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

वेदनीय कर्म

विषयसुख सो दुःख है, निश्चयनय परमाण।
धर्मदास क्षुल्लक कहे, समझ देख मतिमान ।।

जिसप्रकार यदि कोई व्यक्ति अत्यंत धारदार तलवार पर शहद लगाकर उसे जिह्वा से चाटे, वहाँ उसे शहद की मिठास का अवश्य ही थोडा स्वाद आयेगा, परन्तु निश्चित ही तलवार की धार से जिह्वा के कटने पर विशेष दुख भासित होगा, पीडा होगी। ये विषयसुख भी इसीप्रकार के सुख के जनक हैं।

एक वेदनीय कर्म का, भेद दोय परकार। धर्मदास क्षुल्लक कहै, सातासात विचार ।।

निश्चय से तो ये शुभ-अशुभ अथवा साता-असाता जीव के है नही, विषय सुख ने कभी जीव-आत्मा में प्रवेश किया नही। जीव तो सदा अपने ज्ञायक में ही स्थापित है, कर्म तो जड है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

मोहनीय कर्म

पर स्वभाव पररूप के, माने अपनो आप।
ये विकल्प सब छोडके, नये सिद्धगुण थाप ।।

जैसे मदिरा पीने वाला स्व-पर का यथार्थ रूप नही पहिचानता, अनर्गल प्रलाप करता है, विवेकहीन होकर अपना सर्वस्व लुटाने को भी तत्पर हो जाता है। उसीप्रकार ये जीव भी मोहनीय कर्म के वशीभूत होकर आत्मस्वभाव एवं पर के भेद को नही पहिचानता, ये तन-धन-परिवार मेरे हैं, मैं इनका हूँ, ऐसा अनर्गल प्रलाप करता है, पर में एकत्व-ममत्व बुद्धि होने के कारण अपने आत्मवैभव को भी ठुकरा देता है, भव-भव में परिभ्रमण करता है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

आयु कर्म

खण्डन मण्डन आयु नाश, भये सिद्ध परमालय पास।
अचलायु सम अचल अभेद, लीन भये निज रूप अखेद ।।

पाँव में पडा बन्धन व्यक्ति को चलने की सामर्थ्य वाला होते हुए भी एक ही जगह तब तक के रोक कर रखता है जब तक वह बंधन टूट ना जाये। वास्तव में बंधन में तो अपनी योग्यता से ही छूटेगा परन्तु उस निश्चित काल तक के लिये करने योग्य क्या और नही करने योग्य का विचार व्यक्ति स्वयं कर सकता है। ये आयु कर्म पैर में पडी उस बेडी के समान ही है, जब तक कर्म बंधन है; देह–त्याग नही होगा परन्तु निश्चय से तो जीव अमूर्तिक है और बंधन तो मूर्तिक देह को ही बांधता है। अमूर्तिक आत्मा तो कभी बंधा ही नही, इस स्वरूप का विचार ही आत्मानुभव का जनक है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

नामकर्म

तुमरो नाम नही है स्वामी, नामकर्म तुमसे अलगामी।
शुद्ध व्यवहार में नाम अनन्ता, व्यक्तरूप श्रीजिन अरिहंता ।।

जैसे चित्रकार अपनी बुद्धि व कला-कौशल्य से अनेक प्रकार के चित्र बनाता है, उन्हें आकार देता है, उनमें रंग भरता है। अब चित्रों में आकृति का रंग-रूप चित्रकार पर आश्रित है, इसमें किसी का गुण-दोष समाहित नही है; ठीक उसीप्रकार नामकर्म रूपी चित्रकार के निमित्त से ही यह अरूपी आत्मा रूपी पुद्गलमयी देह को प्राप्त करता है; कभी मोटा, कभी पतला, कभी छोटा-बडा, सुन्दर-कुरूप देह को प्राप्त करता है, इसमें जीव के पूर्वकृत कर्म ही निमित्त हैं, परन्तु भीतर तो सकल कर्म मल से रहित शुद्धात्मा ही विराजित है, उसकी दृष्टि ही सकल सुख में कारणभूत है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

गोत्रकर्म

गोत्रादिक सब कर्मको, त्याग भये जिनराज।
धर्मदास क्षुल्लक कहै, वंदन सुखके काज ।।

जिसप्रकार घडे का निर्माता कुम्हार मिट्टी, दण्ड, चक्र इत्यादि द्वारा मिट्टी के छोटे-बडे बर्तन बनाता है, उसीप्रकार इस गोत्रकर्म के द्वारा जीव उच्च-नीच गोत्र को प्राप्त होता है। परन्तु वास्तव में तो आत्मा को कोई गोत्र नही, वह तो इनसे भिन्न है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

अन्तराय कर्म

त्याग ग्रहण से भिन्न है, सदा सुखी भगवान।
धर्मदास क्षुल्लक कहे, स्वानुभव परमान ।।

जैसे गरीब को देने हेतु राजा भण्डारी को आदेश दे कि 'इसे एक हजार रूपये दो', परन्तु भंडारी कोई कारण बताकर उसे पैसे नही देता। ठीक उसीप्रकार अंतरंग में तो विषय-भोग भोगने की अथवा त्यागने की तीव्र आकांक्षा हो परन्तु ये अंतराय नामक कर्म भण्डारी की भाँति उसे भोगने अथवा छोडने नही देता। निश्चय से आत्मा ने क्या ग्रहण किया और क्या त्यागा? इसका विचार ही भेदविज्ञान में सहायी है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

भ्रान्ति खण्डन दृष्टांत

स्वस्वरूप समभाव में, नहीं भरम को अंश।
धर्मदास क्षुल्लक कहै, सुन चेतन निरवंश ।।

जिसप्रकार किसी व्यक्ति ने गले में बहुमूल्य मोतियों की माला पहनी हो परन्तु अज्ञानता अथवा भ्रम के कारण उसे अपने पास दिखाई नही दे रही अथवा उसे माला स्वयं के पास होने का विचार भी नही आ रहा है, तो वह उस माला को सब जगह खोजता है लेकिन वास्तव में तो वह हार उसी के पास है। उसी प्रकार जीव जिस सुख की खोज अनादि से पर-वस्तु में कर रहा है, वह उसी के अंतरंग में विद्यमान है। वह किसी वस्तु-विशेष अथवा स्थान विशेष में नही, यदि एक बार स्वभाव का निर्णय करे तो उसका हित अवश्य होगा।

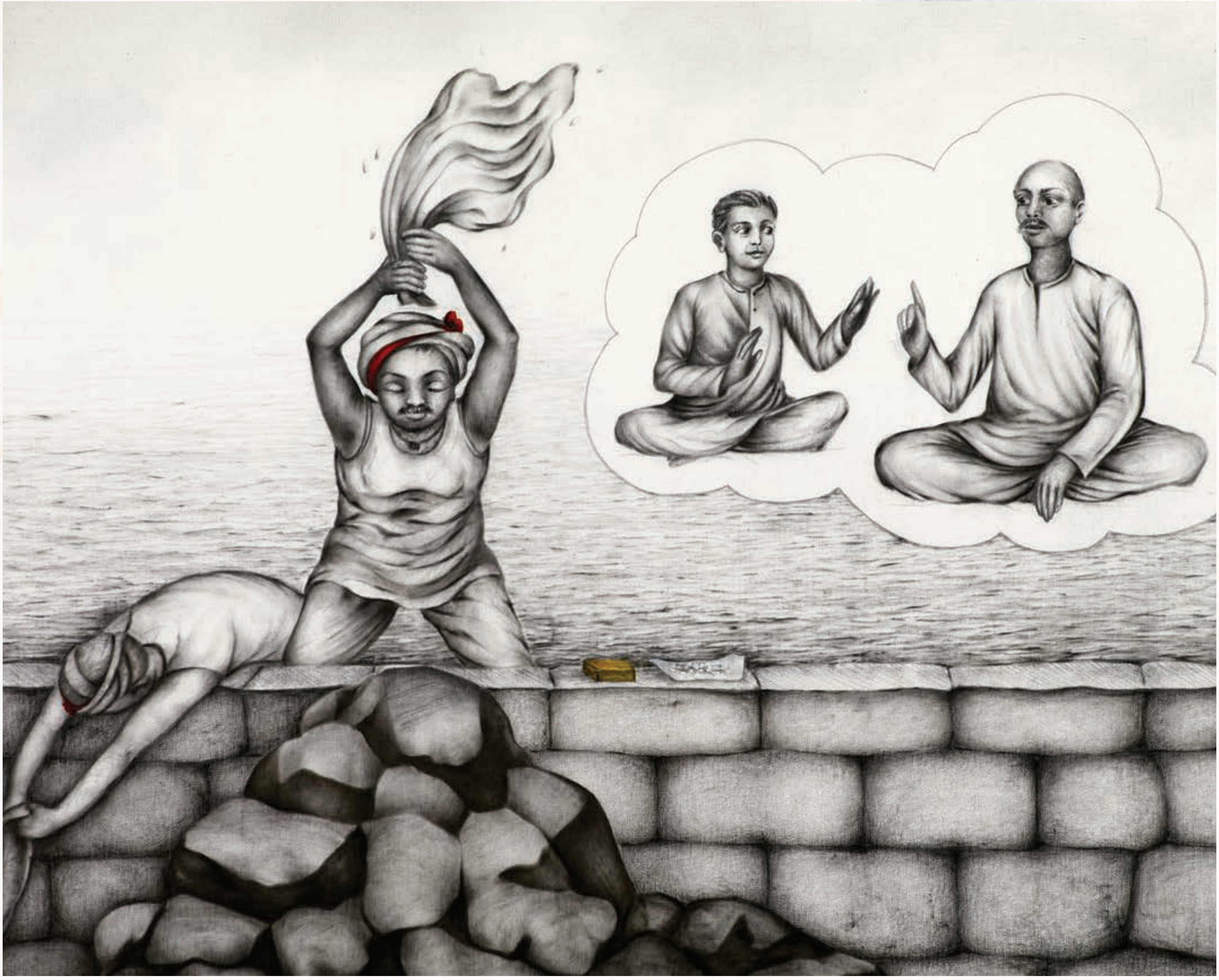

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

भेदज्ञान

भेदज्ञान साबू भयो, समरस निर्मल नीर।
धोबी अंतर आत्मा, धोवै निज गुण–चीर ।।

जिसप्रकार धोबी निर्मल जल धोबी से भरे हुए तालाब में वस्त्र धोता है, वहाँ प्यास लगने पर वह मूर्ख धोबी विचार करता है कि ये दो वस्त्र धोने के बाद जल पीऊँगा, परन्तु एक वस्त्र धोने के बाद फिर भी यही विचार किया कि ये धोने के बाद पीऊँगा, ये धोने के बाद पीऊँगा, इस प्रकार लगातार संकल्प–विचार करता करता वह धोबी निर्मल नीर में रहते हुए भी निर्मल नीर में ही मर गया, परन्तु जल नहीं पिया। वैसे ही जगत के सर्व जीव निर्मल सम्यग्ज्ञानमयी जल से भरे हुए समुद्र में मात्र पर वस्तु को उज्जवल करते हैं और विचार करते हैं कि यह करने के बाद गुरु के उपदेश द्वारा सम्यग्ज्ञानरूपी जल पीकर सुखी होऊँगा, यह करने के बाद गुरु के उपदेश द्वारा सम्यग्ज्ञानरूपी जल पीकर सुखी होऊँगा परन्तु ऐसा करते–करते समय पूर्ण हो जाता है और वे ना–जाने मरकर कहाँ से कहाँ चले जाते हैं।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

नकली घोडा

जैसे कोई बालक मिट्टी के घोडे के साथ प्रीति करता है, खेलता है वह भी दुःखी है तथा कोई सच्चे घोडे के साथ प्रीति करता है वह भी दुःखी है, कारण उस नकली घोडे को कोई तोडे–फोडे तथा दूसरे असली घोडे को भी कोई चारा–पानी न दे व मारे तो वे दोनों ही दुःखी हैं; वैसे ही जो कोई मिट्टी, पत्थर, चित्राम और काष्ठ की झूठी देवमूर्ति के साथ प्रेम–प्रीति करता है वह भी दुःख का ही कारण है तथा कोई सच्चे वीतरागी देव के साथ भी प्रेम–प्रीति करता है वह भी दुःख का ही कारण है, क्योंकि वे दोनों ही इस जीव को सुखी नही कर सकते अर्थात् स्वभाव–वस्तु से भिन्न होकर पर–वस्तु के साथ प्रेम–प्रीति करेगा तो दुःख का ही अनुभव करेगा।

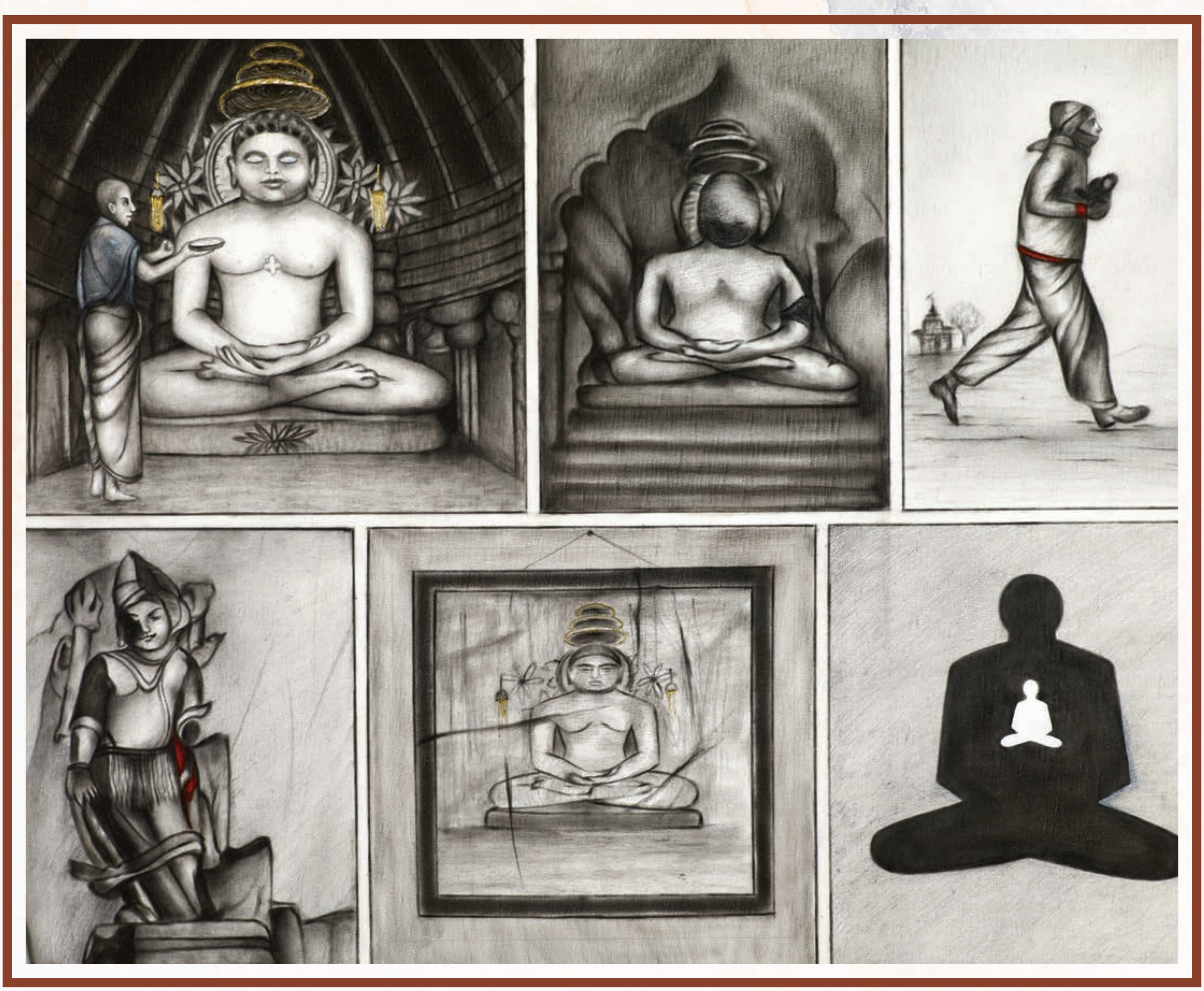

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

मोक्ष की सेन जिनप्रतिमा में है

जैसे कोई पुरुष पाषाण–घातु–काष्ठ और चित्र की मूर्ति की बडे प्रेमभाव से पूजा–भक्ति करता था; कारणवश पाषाण की मूर्ति तो खण्डित हो गई, धातु की देवमूर्ति को कोई चोर चोरी करके ले गया, काष्ठ की देवमूर्ति अग्नि में जलकर भस्म हो गई तथा चित्र की मूर्ति मेघ, हवा व अनेक बार हाथों के स्पर्श से बिगड गई। अतः वह धातु–पाषाण आदि की मूर्ति का नष्ट होना आदि अनेक दूषण प्रत्यक्ष अनुभव में आते हुए देखकर स्वयं में स्वयंमय अपने स्वसम्यग्ज्ञानानुभवगम्य स्वभाव स्वरूप स्वयं को ही देव समझकर चुपचाप रहता है, उसी का अनुभव करता है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

वृक्ष को पकडा हुआ पुरुष

जिसप्रकार कोई पुरुष वन में किसी पेड को पकडकर कहे कि 'मुझे इस वृक्ष ने पकड लिया है, मुझे इस बंधन से मुक्त कराओ।' तो यह सुनकर कोई विश्वास नही करेगा क्योंकि वृक्ष किसी को बाँध सकता नही, ठीक उसीप्रकार यह जीव स्वयं राग-द्वेष करके भी समस्त दोष कर्मों पर डाल देता है और कहता है कि इन कर्मों ने मुझे बाँध लिया है। वास्तव में ये जड कर्म चेतन जीव को कैसे बाँध सकते हैं, जीव बंधता भी अपने परिणामों से है और मुक्त भी अपने परिणामों से होगा। इसप्रकार जो बंध-मोक्ष से भिन्न होने की इच्छा करता है वह मिथ्यादृष्टि है।

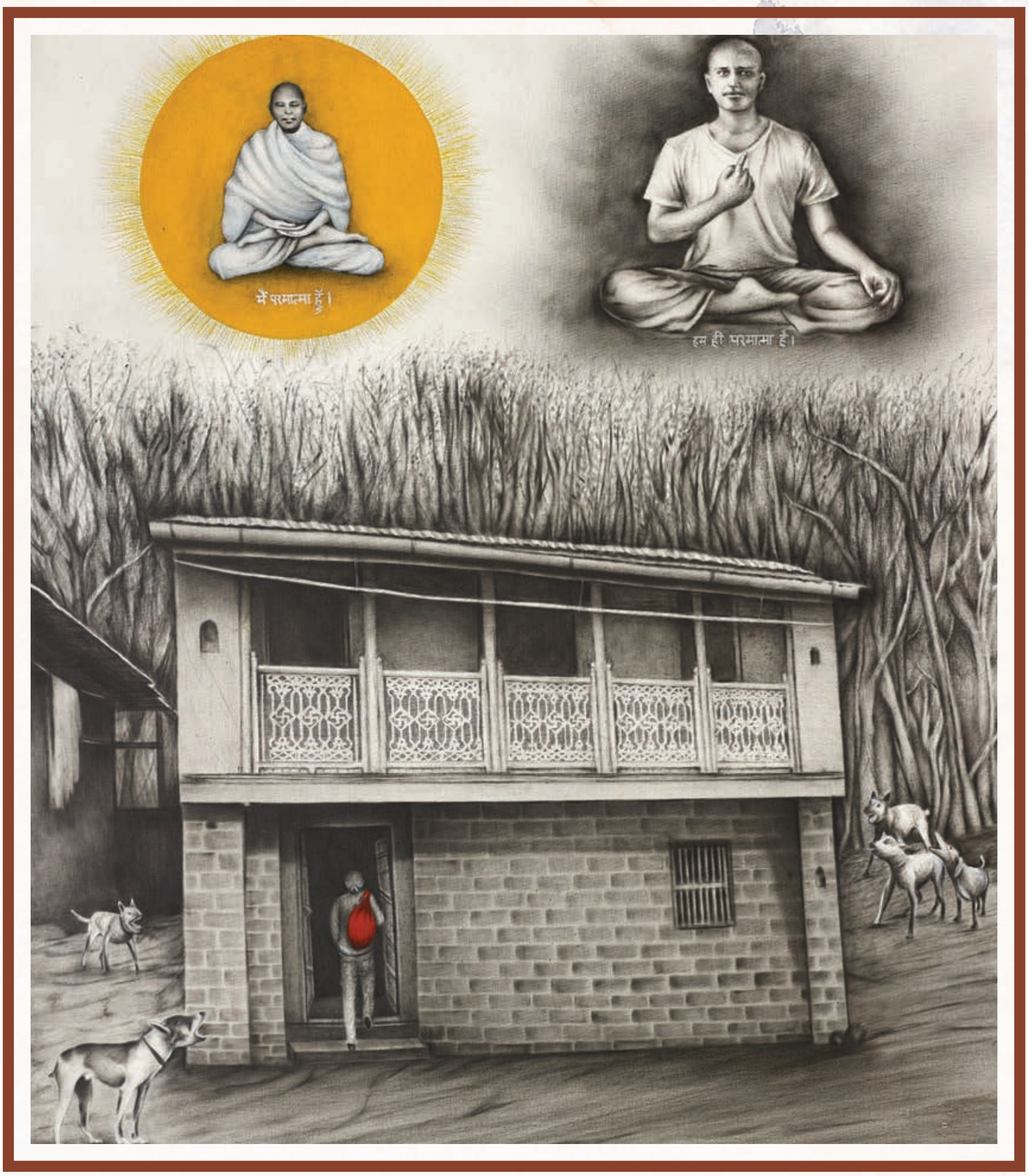

Charcoal and Acrylic on Canvas | 30" x 24"

चोर को देखने वाला भौंकता है

जिसप्रकार रात्रि के समय घर में चोरी करने आये चोर को देखकर कुत्ता भौंकता है, उसकी आवाज सुनकर शहर के बाकी कुत्ते भी भौं-भौं सुनकर भौंकने लगते है जबकि उन्होंने चोर को देखा भी नही है। उसीप्रकार आत्म स्वरूप के अनुभव से ज्ञानी पुरुष ऐसा कहते हैं कि 'मैं ही परमात्मा हूँ', परन्तु उनके शब्द सुनकर मिथ्यादृष्टि अज्ञानी भी जब कहता है कि 'हम ही परमात्मा है', तब उसे उन शब्दों की भाव-भासना नहीं है, वह मात्र शब्दों में ही कह रहा है, निश्चय से उसके शब्द और सम्यक ज्ञानी में परस्पर सूर्य-अंधकार के समान भेद है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

ध्वनि तू ही

जिसप्रकार एक खाली भवन में चिल्लाने पर उसकी प्रतिध्वनि सुनाई पडती है, तब यदि वह सोचे कि यह ध्वनि किसी ओर की है तो वह मूर्ख ही होगा, क्योंकि वह ध्वनि उसी की है। उसीप्रकार स्वभाव के भवन में यदि देखेंगें तो वह स्वसम्यग्ज्ञानमयी परमात्मा, 'सो हम' अर्थात मैं ही हूँ और कोई नही।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

गिनती करने वाला पुरुष

एक बार दस व्यक्ति नाँव से नदी पार कर रहे थे, जब वे नाँव में सवार हुए थे तो वे दस ही थे परन्तु जब नाँव से उतरने लगे तो नौ ही रह गये, प्रत्येक बार एक व्यक्ति जब सबको गिनता तो संख्या नौ ही रह जाती, कारण कि वह स्वयं को भूलकर बाकी सबको गिनता है। और एक व्यक्ति के खो जाने के भय से वे सब रोने लगते हैं। परन्तु उनके दुखी होने के कारण का सही आधार नही है, मात्र स्वयं को भूलना ही है। ठीक उसीप्रकार अज्ञानी भी मात्र पर को गिनता है, उसे ही जानता है, उसी में अपनापन करता है, स्वयं को भूलकर दुखी होता है, वहाँ दुखी होने का कारण वह स्वयं ही है, कोई अन्य नही।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

प्रतिबिंब को देखना

जिसप्रकार एक सिंह कुएँ में अपना प्रतिबिंब देखकर यह विचार करे कि इस वन में मेरे अलावा भी एक सिंह है, कदाचित वो मुझसे ज्यादा शक्तिवान तो नही? इसे डराकर मैं ही जंगल का राजा रहूँगा, इस विचार से वह उस पर दहाडता है, परन्तु कुएँ में दहाडने से उसकी ध्वनि अधिक आवाज के साथ गूँजती है और सिंह भयभीत होकर कुएँ में ही गिर जाता है। तो वह मूर्ख ही है क्योंकि प्रतिबिंब में दिखने वाला वह स्वयं ही था। ठीक इसप्रकार अज्ञानी पर में अपनापन करके भ्रमित होता है।

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

घडे में मुट्ठी

एक बार एक बंदर घडे में रखे फलों को लेने हेतु उसमें हाथ डालता है और फल हाथ में लेते ही मुठ्ठी बनाकर हाथ बाहर निकालने लगता है और रोने लगता है कि मेरा हाथ घडे ने पकड लिया है, मैं हाथ बाहर नही निकाल पा रहा, उसी प्रकार एक तोता भी पेड की टहनी पकडकर उल्टा लटक जाता है और रोने लगता है कि इस पेड ने मुझे पकड लिया है, मैं मुक्त कैसे होऊँ। इन दोनों ही घटनाओं में स्पष्ट है कि वास्तव में ये दोनो ही अपने अज्ञान से दुखी है ना कि पर वस्तु से।

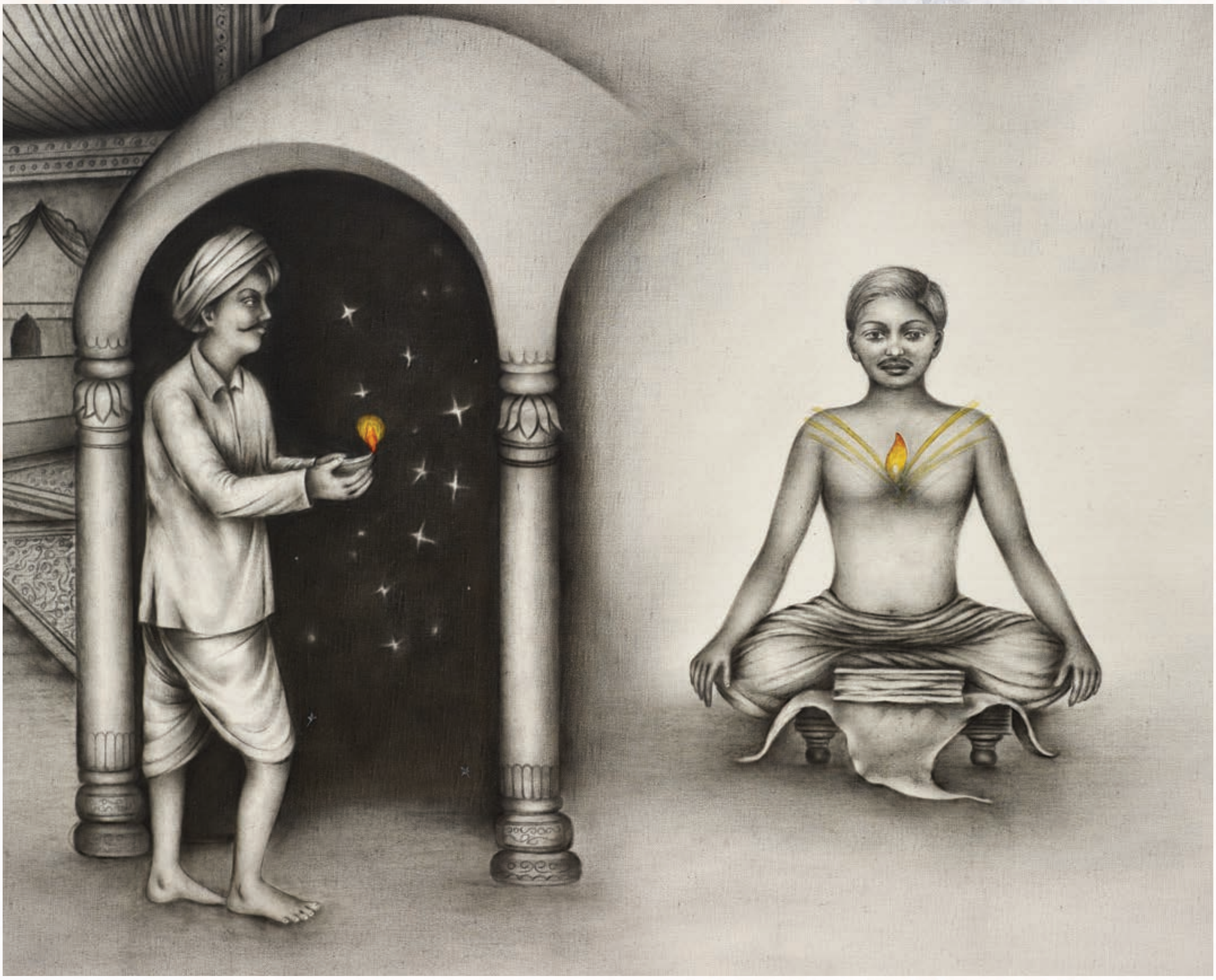

Charcoal and Acrylic on Canvas | 24" x 30"

संसार भवन में रत्नत्रय

भेदज्ञान से भ्रम गयो, नहीं रही कुछ आश।
धर्मदास क्षुल्लक लिखै, अब तोड मोह की पाश ।।

जिसप्रकार अंधेरे भवन में रत्न खो गया हो और कोई पुरुष रत्नप्राप्ति की इच्छा से हाथ में दीपक लेकर रत्न ढूंढने निकले तो निश्चित ही उसे रत्न मिल सकता है, उसीप्रकार इस संसार में भ्रम रूपी अंधकार चहुँ ओर है, उसमें रत्नत्रय रूपी रत्न खो गया है, यदि जीव स्वभाव सम्यग्ज्ञान रूपी दीपक की सहायता से उसे ढूंढे तो उसे वह अवश्य ही प्राप्त होगा।

युवराज पाटिल

कला जगत में सुविख्यात श्री युवराज पाटिल ने अपनी औपचारिक कला शिक्षा कोल्हापुर के कलानिकेतन महाविद्यालय से प्राप्त की। इसके बाद आपने दलवी आर्ट इंस्टिट्यूट, कोल्हापुर और भारती कला महाविद्यालय, पुणे में उच्च प्रशिक्षण लिया। आपने कई एकल और समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया है तथा ऑल इंडिया स्तर की प्रतियोगिताओं जैसे कैमलिन आर्ट फाउंडेशन वार्षिक प्रदर्शनी, महाराष्ट्र राज्य कला प्रदर्शनी, और मुंबई, पुणे, नागपुर, कोल्हापुर आदि में आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय कला प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया है।

आपकी कलाकृतियों को इन प्रदर्शनियों में अत्यंत सराहना प्राप्त हुई है। आज आपकी रचनाएँ देशभर के अनेक प्रतिष्ठित कला संग्रहकर्ताओं और कला संस्थानों में गर्वपूर्वक संग्रहित हैं।

कोल्हापुर के उपनगरीय क्षेत्र से आने वाले युवा कलाकार युवराज पाटिल अपने कैनवस पर सफेद और काले के अद्वितीय महत्व को साकार करते हैं। आपकी चित्रकृतियों के विषय हमारे आस-पास के जीवन और परिवेश से प्रेरित हैं।

आपकी चित्रकृतियों में प्रत्येक सूक्ष्म विवरण दिखाई देता है, रूपाकारों की सटीक व्यवस्था, प्रकाश और छाया का सुंदर संतुलन और विशेष रूप से लाल रंग का सटीक प्रयोग, जो आपके चित्रों में जीवन का संचार करता है और उन्हें आकर्षक बनाता है।

गुरु कहान कला संग्रहालय द्वारा संचालित जैन सिद्धान्तों को चित्र रूप में रूपान्तरित करने के कार्य की आपने अनुमोदना की और सम्यग्ज्ञान दीपिका ग्रन्थ पर आधारित इस कला श्रृंखला के निर्माण का कार्य कर आपने इस प्रभावना के कार्य में अवश्य ही अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई एवं गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ आपका हृदय से आभारी है।

वैराग्य वर्षा

Oil on Canvas | 36" x 48"

संसार में लोग अपने किसी सम्बन्धी मनुष्य की मृत्यु होने पर उसे पुकार कर रुदन करते हैं तथा उसका जन्म होने पर जो हर्ष मनाते हैं उसे उन्नत बुद्धि के धारक गणधर आदि पागलपन कहते हैं; क्योंकि अज्ञानवश जो मिथ्या प्रवृत्तियाँ की गई हों उन से होने वाले कर्म के प्रकृष्ट बंध और उस के उदय से सदा यह सारा विश्व मृत्यु और उत्पत्ति की परम्परा स्वरुप है।

क्रमांक ४. श्री आत्मानुशासन

Oil on Canvas | 48" x 36"

यह जगत इन्द्रजाल तथा कदली-स्तंभ के समान केवल निःसार है, यह क्या तूं नहीं जानता? नहीं सुना? अथवा प्रत्यक्ष नहीं दिखता? हे जीव! आप्तजनों की मृत्यु के पीछे शोक करना वह निर्जन वन में टेर लगाने समान व्यर्थ है। जो उत्पन्न हुआ है वह मरेगा ही। मृत्यु के समय उसे कौन बचा सके ऐसा है? तथापि मूर्ख मनुष्य सम्बन्धिजनों की मृत्यु के पीछे शोक करते हैं यही अनादिकालीन मोह का पागलपन है।

क्रमांक ५. श्री आत्मानुशासन

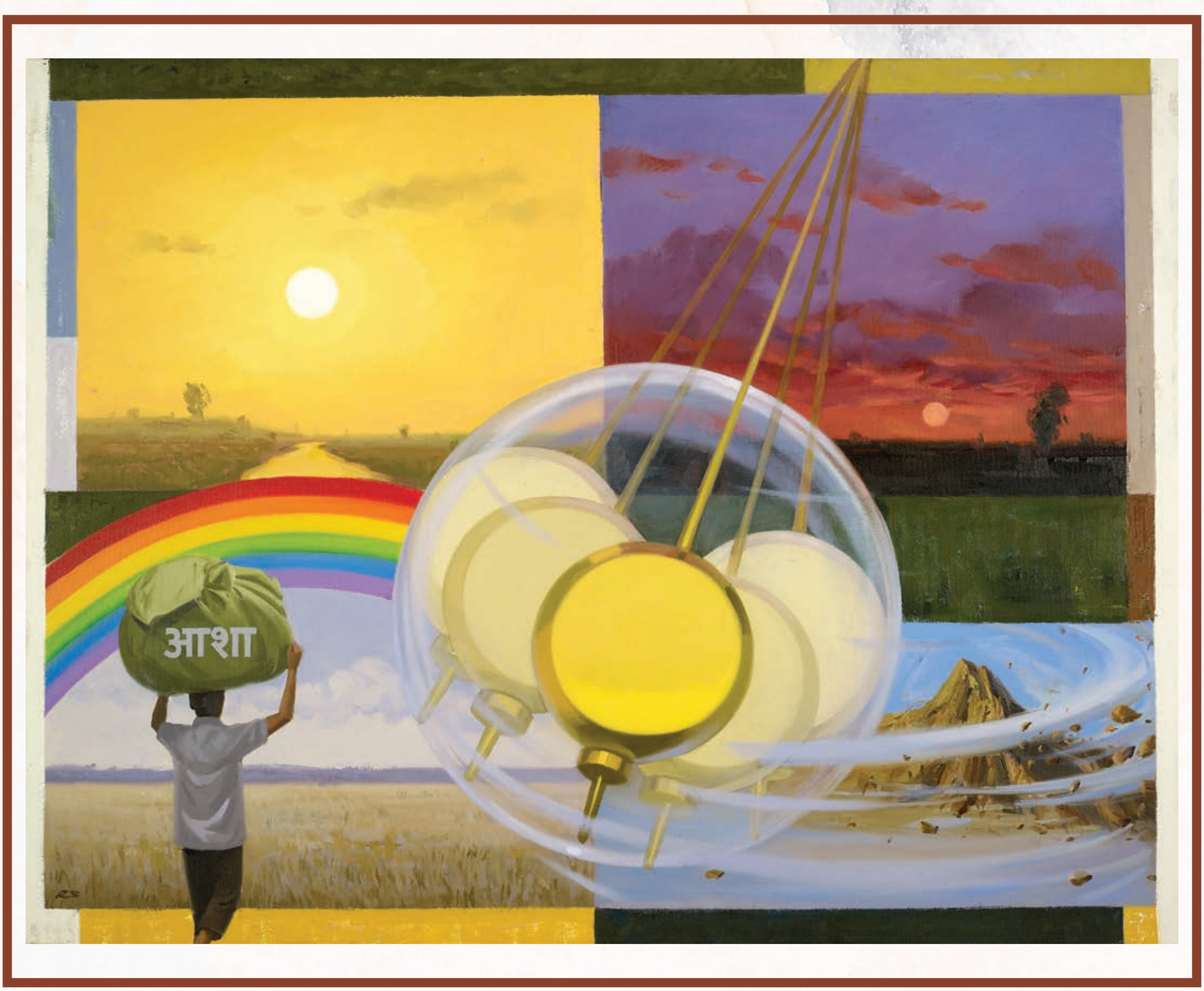

Oil on Canvas | 36" x 48"

हे भाई! अपनी दृष्टि के सामने तू क्या नहीं देखता कि यह जगत कालरूपी प्रचण्ड पवन से निर्मूल हो रहा है! भ्रान्ति को छोड! जगत में किसी की नाममात्र भी स्थिरता नहीं है। जिस दिन का मंगलमय प्रभात उगता है, वही दिवस अस्तपने को प्राप्त होता है। भाई! इस जगत का स्वभाव ही क्षणभंगुर है! पर्वत समान विस्तीर्ण लगनेवाले रूपों का घडीभर में अवशेष भी दिखायी नहीं देता? कौन जाने किस कारण से तूं इस इन्द्रजालवत् जगत के इष्ट पदार्थों में आशा बाँधकर भटकता रहता है।

क्रमांक ९. श्री आत्मानुशासन

Oil on Canvas | 48" x 36"

ताड के वृक्ष से टूटा हुआ फल नीचे पृथ्वी पर गिरते हुए बीच में कब तक रहेगा? वैसे ही जन्म होने के पश्चात् का जीवन आयु-स्थिति में कब तक रहेगा? अति अल्पकाल और वह भी अनियत। इसलिये हे भव्य! इन देहादि को क्षणभंगुर जानकर वास्तविक अविनाशी पद का साधन अन्य सर्व कार्यों को छोडकर भी त्वरित कर लेना यही सुयोग्य है, क्योंकि जीवन-काल अत्यन्त संकीर्ण है।

क्रमांक २६. श्री आत्मानुशासन

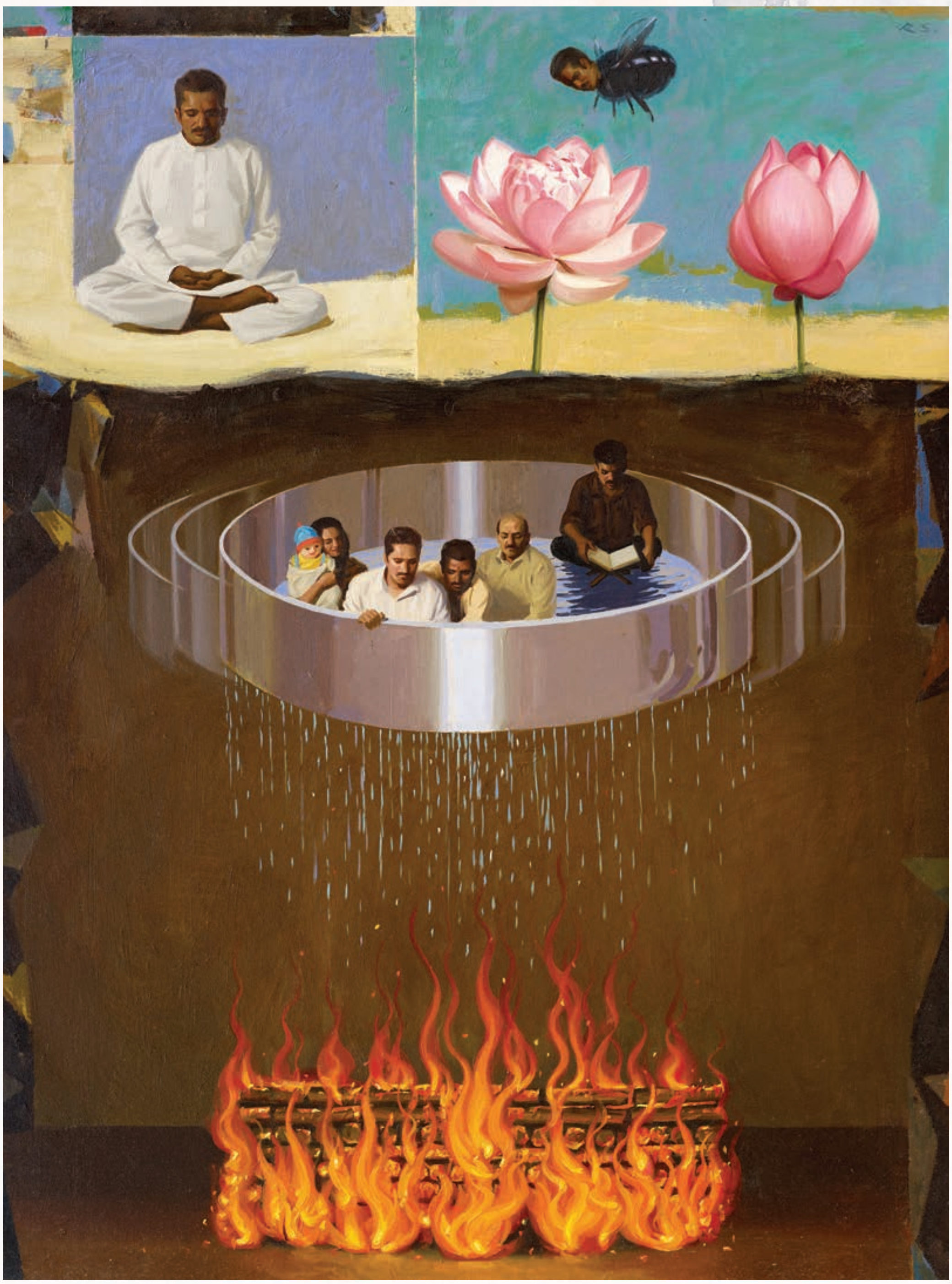

Oil on Canvas | 48" x 36"

श्रुति (आगम), बुद्धि, बल, वीर्य, प्रेम, सुन्दरता, आयु, शरीर, कुटुंबीजन, पुत्र, स्त्री, भाई और पिता आदि सब ही चालनी में स्थित पानी के समान स्थिर नहीं हैं; देखते-देखते ही नष्ट होनेवाले हैं। इस बात को प्राणी देखता है तो भी खेद की बात है कि वह मोहवश आत्मकल्याण को नहीं करता है।

क्रमांक ३४. श्री सुभाषित रत्न-संदोह

Oil on Canvas | 36" x 48"

सम्पत्ति, पुत्र और स्त्री आदि पदार्थ ऊंचे पर्वत के शिखर पर स्थित तथा वायु से चलायमान दीपक के समान शीघ्र ही नष्ट होनेवाले हैं तथापि जो मनुष्य उनके सम्बन्ध में स्थिरता का अभिमान करते हैं वे मानों मुट्ठी से आकाश का नाश करते हैं अथवा व्याकुल हो कर सूखी नदी तैरते हैं अथवा तृषा से पीडित होकर प्रमादयुक्त होते हुए रेती को पीते हैं।

क्रमांक ४०. श्री पद्मनन्दि पंचविंशति

Oil on Canvas | 48" x 36"

दुनिया के धंधे करता फिरता है, अपना कार्य नहीं करता, अपनी झोपडी जल रही है उस को बुझाता नहीं, दूसरों के घर का इलाज करता फिरता है।

क्रमांक ४८. श्री बुधजन सत्सई

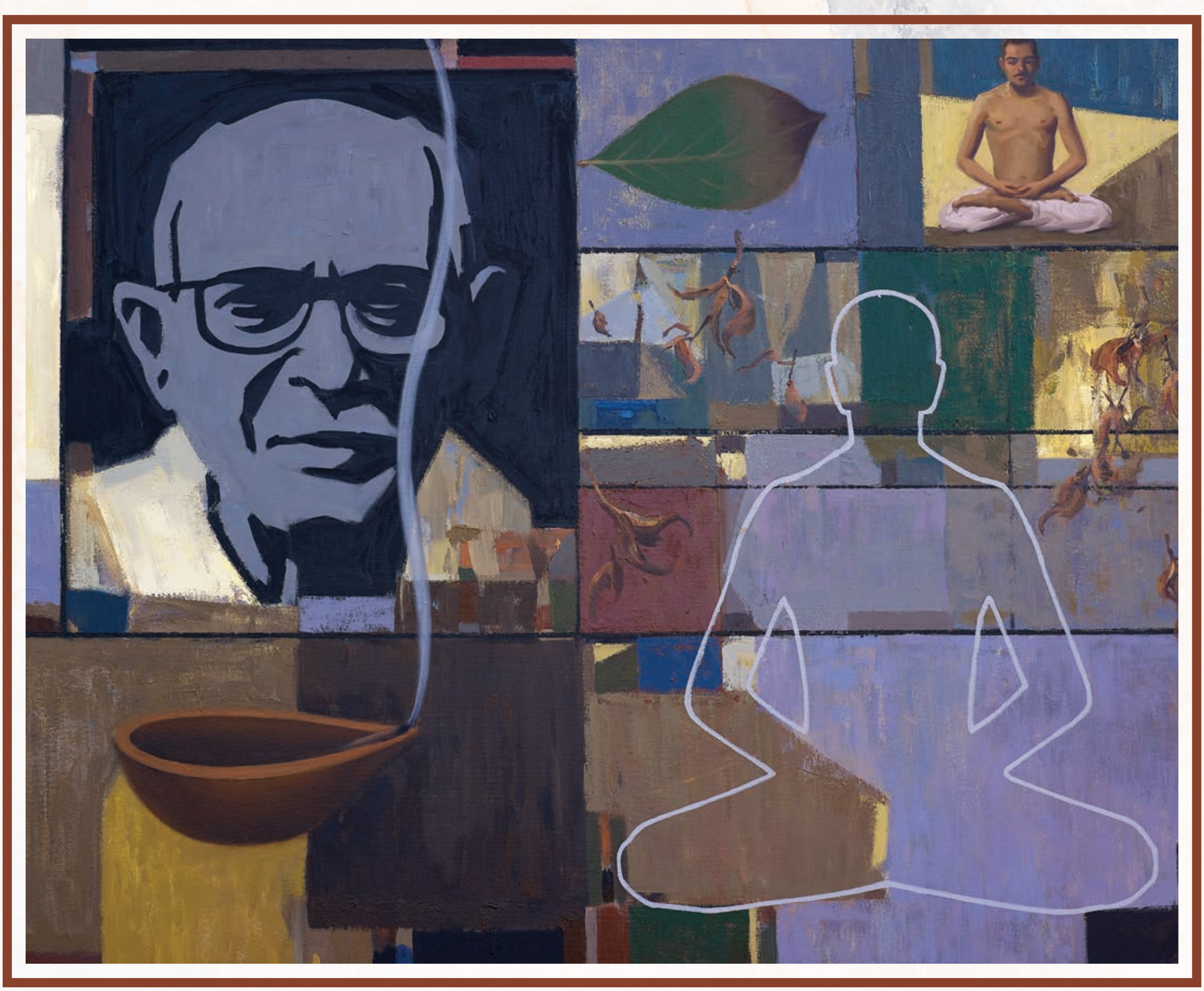

Oil on Canvas | 36" x 48"

हे आत्माराम! तू देह के बुढापा और मरने को देखकर डरा मत कर। जो अजर अमर परमब्रह्म शुद्ध स्वभाव है, उसको तू आत्मा जान।

क्रमांक ५१. श्री परमात्म प्रकाश

Oil on Canvas | 36" x 48"

कोई अति निद्रावश मनुष्य को उसके मर्मस्थान पर मुद्गर की चोट मारे, अथवा अग्नि की उष्णता से देह को आँच लगे, अथवा कहीं बाजों की ध्वनि सुने तो वह तुरन्त जाग उठता है, परन्तु अविवेकी जीव को पाप कर्मफल के लगातार – एक के बाद एक उदयरूप मुद्गरों की मार मर्मस्थान पर पडती रहती है, महादुःखरूप त्रिविध ताप से उसका शरीर निरन्तर जलता रहता है और आज यह मरा, कल वह मरा, अमुक ऐसे मरा, अमुक वैसे मरा, ऐसे यमराज के बाजों के भयंकर शब्द बारम्बार सुनने में आते हैं, तथापि वह महा–अकल्याणकारी अनादि मोह निद्रा को किंचित् भी हटा नहीं पाता, यह परम आश्चर्य है।

क्रमांक ५७. श्री आत्मानुशासन

Oil on Canvas | 36" x 48"

इस लोक में राजाओं के यहाँ तो घडी का घंटा बजता है और शब्द करता है सो सब के क्षणिकपन को प्रगट करता है; अर्थात् जगत को मानो पुकार-पुकार कर कहता है कि हे जगत के जीवों! जो कुछ अपना कल्याण करना चाहते हो शीघ्र ही कर लो, नहीं तो पछताओगे। क्योंकि यह जो घडी बीत गई वह किसी प्रकार भी पुनर्बार लौट कर नहीं आयेगी, इसी प्रकार अगली घडी भी जो व्यर्थ ही खो दोगे तो वह भी गई हुई नहीं लौटेगी।

क्रमांक ५९. श्री ज्ञानार्णव

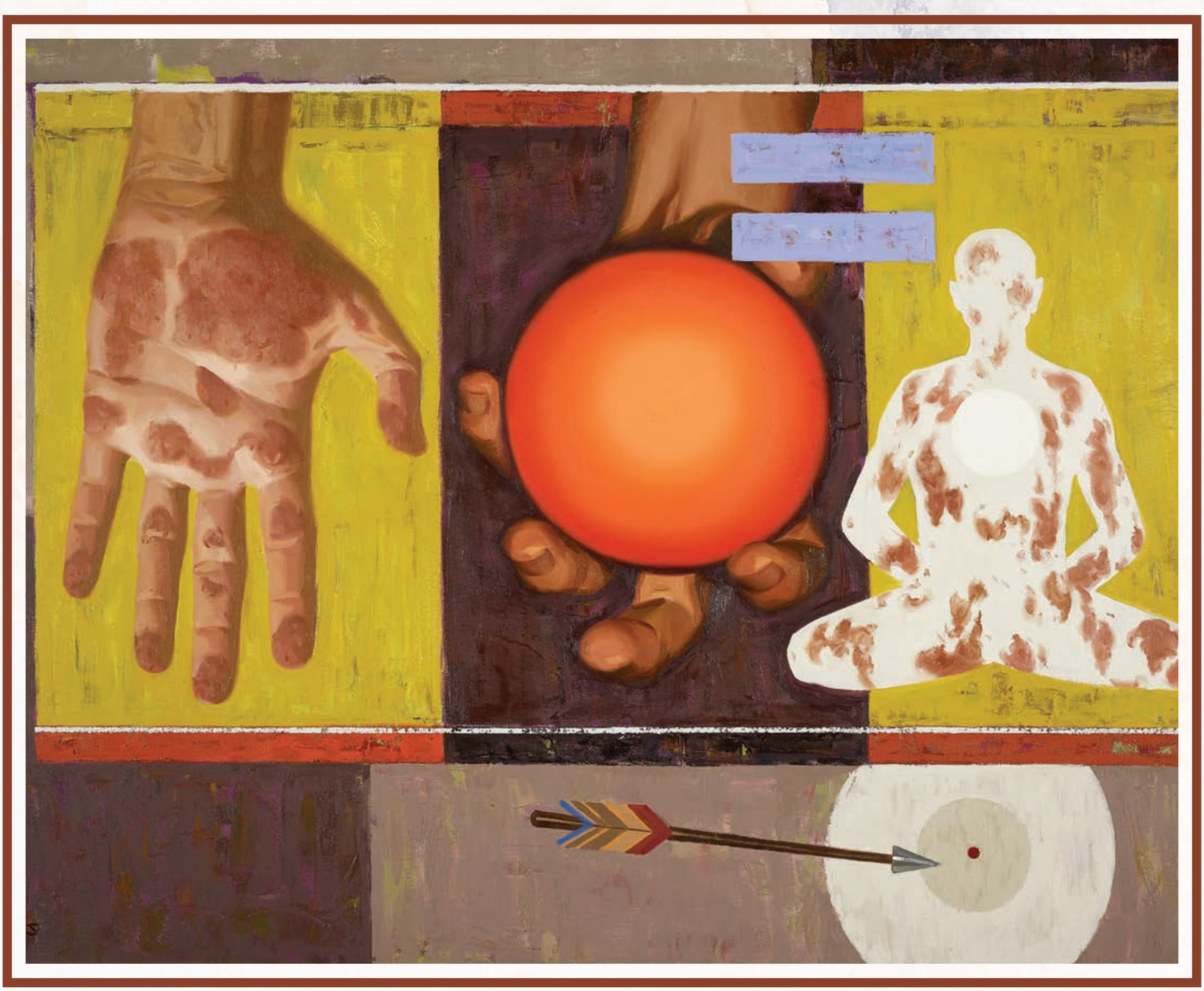

Oil on Canvas | 36" x 48"

जैसे कोई पुरुष तप्त लोहे के गोले द्वारा पर को घायल करने की इच्छा करता हुआ प्रथम तो स्वयं अपने को घायल करता है (स्वयं अपने ही हाथ को जलाता है), फिर दूसरे को चोट पहुँचे या न पहुँचे- कोई नियम नहीं है। वैसे ही जीव तप्त लोहे के गोले समान मोहादि परिणामरूप परिणमता हुआ प्रथम तो निर्विकार स्वसंवेदन ज्ञानस्वरुप निज शुद्ध भाव-प्राण को ही घायल करता है, फिर पर के द्रव्य प्राणों को चोट पहुँचे या न पहुँचे - नियम नहीं है ।

क्रमांक ६१. श्री प्रवचनसार टीका

Oil on Canvas | 36" x 48"

इस लोक में ग्रह, चंद्र, सूर्य, तारे तथा छह ऋतु आदि सब ही जाते और आते हैं अर्थात् निरंतर गमन-आगमन करते हैं। परंतु जीवों के गये हुए शरीर स्वप्न में भी कभी लौट कर नहीं आते। यह प्राणी वृथा इन से प्रीति करता है।

क्रमांक ७१. श्री ज्ञानार्णव

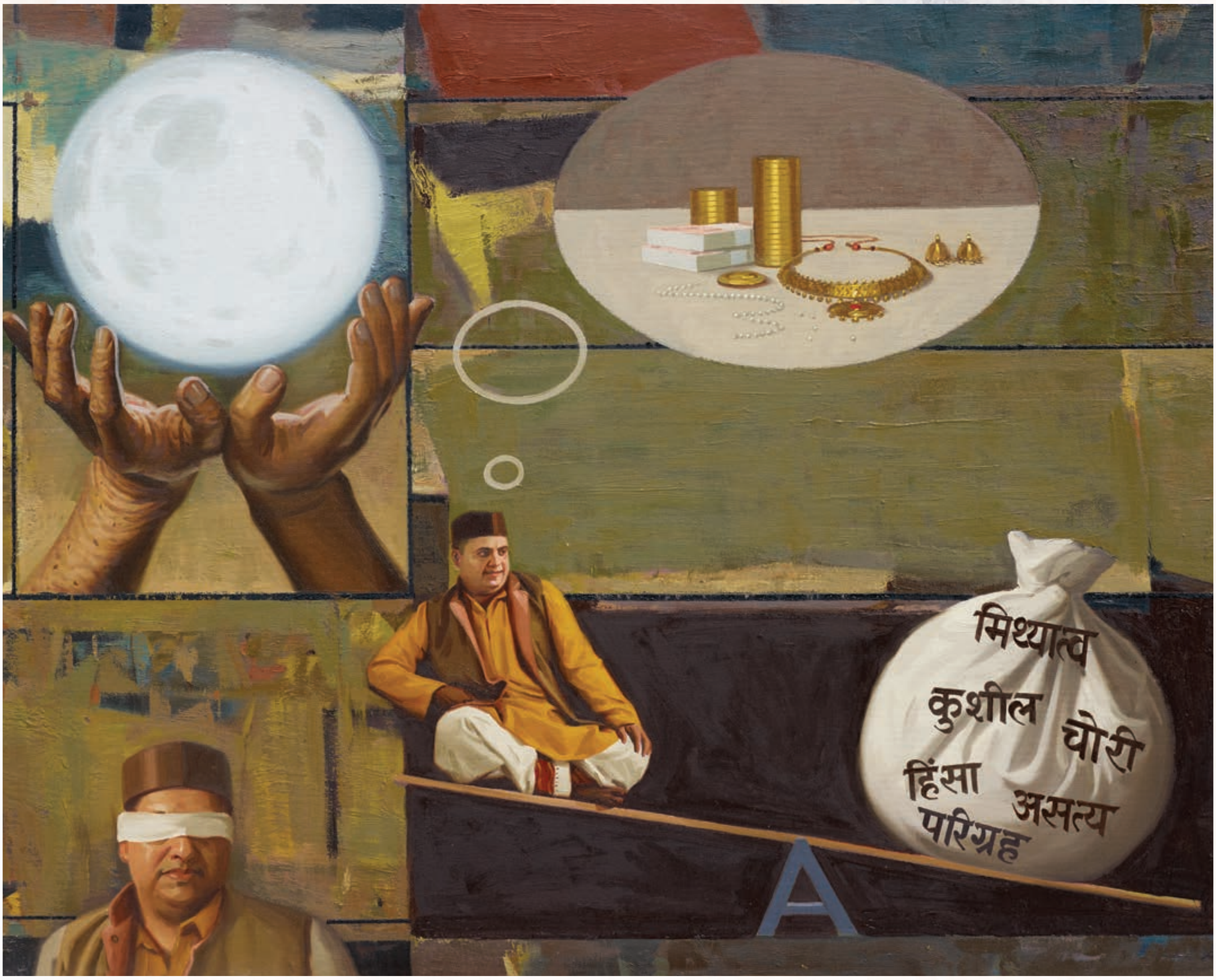

Oil on Canvas | 36" x 48"

देखो! इन जीवों का प्रवर्तन कैसा आश्चर्यकारक है कि शरीर तो प्रतिदिन छीजता जाता है और आशा नहीं छीजती है; किन्तु बढती जाती है, तथा आयुबल तो घटता जाता है और पाप कार्यों में बुद्धि बढती जाती है, मोह तो नित्य स्फुरायमान होता है और यह प्राणी अपने हित वा कल्याण मार्ग में नहीं लगता है। सो यह कैसा अज्ञान का माहात्म्य है !

क्रमांक ७९. श्री ज्ञानार्णव

Oil on Canvas | 36" x 48"

कितने ही मनुष्य सदा महान शास्त्र समूह में परिभ्रमण करते हैं अर्थात् अनेक शास्त्रों का परिशीलन करते हैं फिर भी वे उत्कृष्ट आत्मतत्त्व को लकडी में शक्ति रूप से विद्यमान अग्नि समान जानते नहीं हैं।

क्रमांक ८३. श्री पद्मनन्दि पंचविंशति

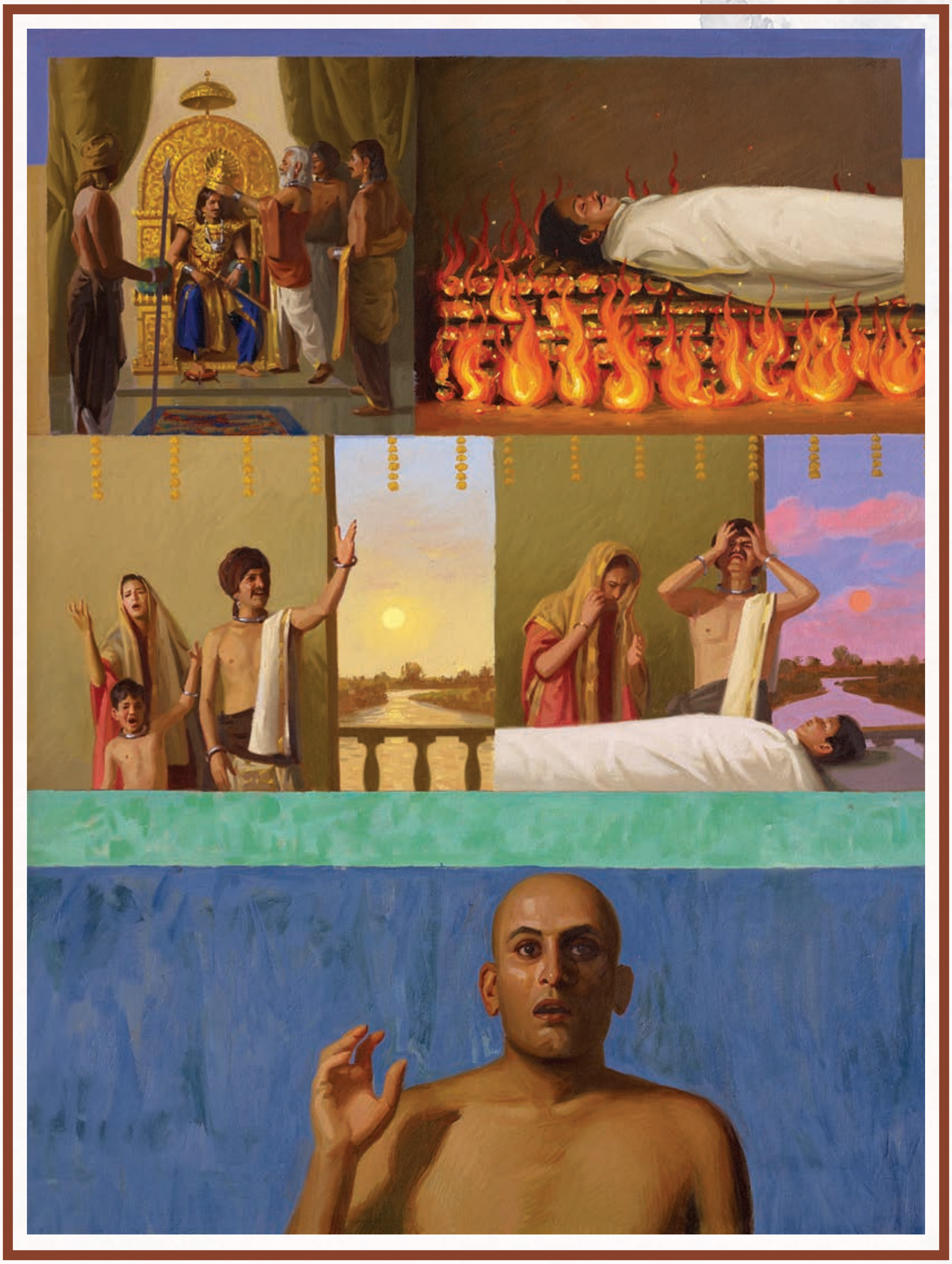

Oil on Canvas | 48" x 36"

जिस घर में प्रभात के समय आनन्दोत्साह के साथ सुंदर सुंदर मांगलिक गीत गाये जाते हैं, मध्याह्न के समय उसी घर में दुःख के साथ रोना सुना जाता है। प्रभात के समय जिस के राज्याभिषेक की शोभा देखी जाती है उसी दिन उस राजा की चिता का धुंआ देखने में आता है। यह संसार की विचित्रता है।

क्रमांक ८७. श्री ज्ञानार्णव

Oil on Canvas | 36" x 48"

विधि-दैव-भाग्य भुजंग के समान टेढा चलता है। कभी वैभव के शिखर पर चढता है तो कभी विपत्ति की खाई में गिरता है। आज श्रीमंत है तो कल दरिद्री बनकर घूमता फिरता है। जीवन पवन वेग की तरह चंचल है। धन कमाने में कष्ट, उसकी रक्षा करने में कष्ट, अंत में किसी कारण से धन का वियोग होने पर यह जीव अति कष्टित होता है। यौवन शीघ्र ही नष्ट प्राय: होता है। तथापि यह जीव संसार की नानाविध संकट-परंपरा से भयभीत होता नहीं। यह बडा आश्चर्य है।

क्रमांक ११८. श्री सुभाषित रत्न-संदोह

Oil on Canvas | 36" x 48"

कहीं रुकना नहीं। विकल्प का कुछ भी खटक बना रहेगा तब तक भीतर नहीं जा सकेगा। इस समय जवानी है इसलिए कमाई कर लूँ–यह बात रहने दे भाई ! मौत सिर पर नौबत बजा रही है। फिर करूँगा, फिर करूँगा ; ऐसा रहने दे। अंतर में कोई भी विकल्प रहेगा कि यह कर लूँ..... यह कर लूँ..... ऐसे वादे करेगा तो भीतर नहीं जा सकेगा।

क्रमांक १२२. दृष्टि के निधान

Oil on Canvas | 36" x 48"

काल आने पर वर्षा होती है, काल आने पर वृक्ष खिलते हैं, काल आने पर चन्द्रमा का उदय होता है, पशु भी समय आने पर घर आते हैं, स्वाति नक्षत्र के काल में सीप में पानी की बूँद पडने से मोती बनती है, वैसे ही उत्तम देव-गुरु के महान योग-काल में तू आया और पूज्य पदार्थ अनुभव में न आये वह अजब तमाशा है!

क्रमांक १३९. दृष्टि के निधान

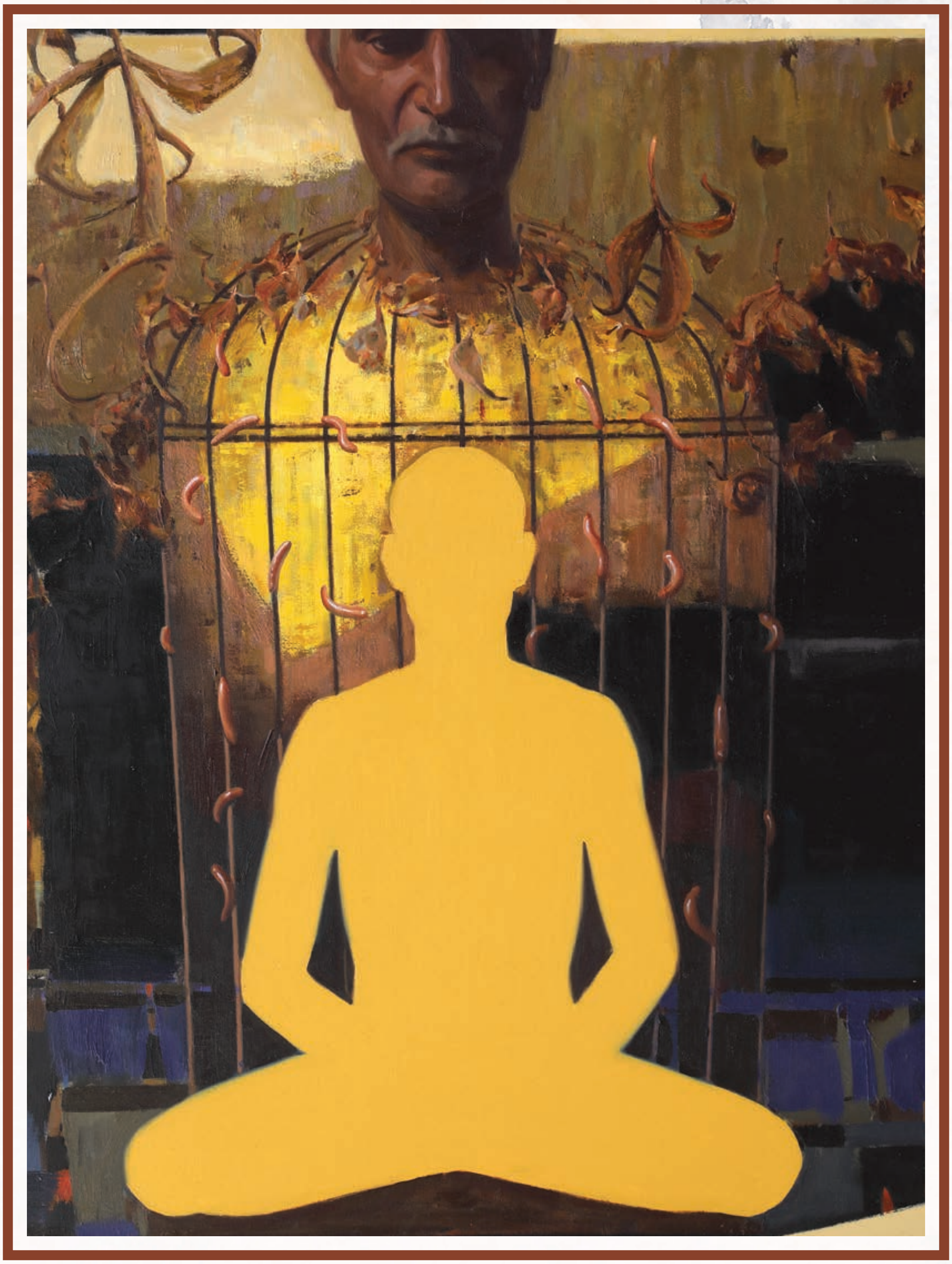

Oil on Canvas | 48" x 36"

हे आत्मन् ! कृमियों के सैकडों जालों से भरा हुआ और नित्य जर्जरित होता यह देह रूपी पिंजरा, इसके नष्ट होने से तुम भय मत कर; क्योंकि तुम तो ज्ञान शरीरी हो।

क्रमांक १९७. मृत्यु महोत्सव

Oil on Canvas | 36" x 48"

जैसे रेशम का कीडा अपने ही मुख से तारों को निकाल कर अपने को ही उसमें आच्छादित कर लेता है, उसी प्रकार हिताहित में विचारशून्य होकर यह गृहस्थजन भी अनेक प्रकार के आरंभों से पाप उपार्जन करके अपने को शीघ्र ही पाप–जाल में फँसा लेते हैं।

क्रमांक २४०. श्री ज्ञानार्णव

Oil on Canvas | 36" x 48"

हाय! बडे दुःख की बात है कि – संसार रूपी कत्लखाने में पापी और क्रोधी ऐसे इन्द्रिय–विषयरुप चाण्डालों ने चारों ओर राग–रूप भयंकर अग्नि सुलगा रखी है, ताकि चारों ओर से भयभीत हुए तथा अत्यन्त व्याकुल हुए पुरूष रूपी हिरन अपने बचाव के लिये अन्तिम शरण चाहते – ढूंढते हुए काम रूपी चाण्डाल ने बना रखे स्त्री रूप कपट स्थान में (फन्दे में) जा–जाकर फँस जाते हैं।

क्रमांक २७३. श्री आत्मानुशासन

रियाज़ समाधान

रियाज समाधान महाराष्ट्र के मुंबई में रहने वाले एक प्रसिद्ध समकालीन कलाकार हैं। वह मुख्य रूप से पेंटिंग और विज़ुअल आर्ट के लिए जाने जाते हैं। उनके काम में प्राकृतिक दृश्य, मानवीय भावनाएँ, संबंध और जीवन के अनुभवों को गहराई से दिखाया जाता है।

उन्होंने मुंबई के सर जे.जे. इंस्टीट्यूट ऑफ एप्लाइड आर्ट से बी.एफ.ए. की पढाई की। रियाज समाधान की कलाकृतियाँ कई गैलरी और प्रदर्शनियों में लग चुकी हैं, और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उनकी कला की सराहना की जाती है। उनका काम सरल दिखने के बावजूद गहरी सोच और भावनाओं को व्यक्त करता है।

जैनधर्म के प्रसिद्ध वैराग्यमयी संदेशों के उपर कलाकृति करने के अवसर को आपने शिरोधार्य किया, निश्चित ही आपके माध्यम से अनेक जन इन सिद्धान्तों के महत्त्व को समझेंगे।

गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई लगभग अनेक वर्षों से अथक श्रम करते हुए पूरे भारत तथा विश्वभर में जिनशासन के तत्त्व-सिद्धांत और विचारों का भरपूर प्रचार कर रहा है। जिसके आधार अध्यात्म युगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी तथा उनकी प्राणी-मात्र के कल्याण की भावना ही है। इसी कडी में गुरुदेवश्री की साधनास्थली सुवर्णपुरी सोनगढ में सन २०१८ में भारत के अनेक गणमान्य लोगों और हजारों मुमुक्षु साधर्मियों की उपस्थिति में गुरु कहान कला संग्रहालय का भव्य उद्घाटन हुआ। जिसमें तीर्थंकर परमात्मा की वाणी में आये अनेक तत्त्व एवं सिद्धांतों, पू. गुरुदेवश्री तथा पू. बहिनश्री के जीवनदर्शन एवं वचनामृतों पर आधारित कला प्रदर्शनी का संयोजन किया जा रहा है। विगत वर्षों में विश्वभर के अनेकों साधर्मियों, पर्यटकों तथा विद्वानों द्वारा कला संग्रहालय की सराहना की गयी है एवं इस प्रदर्शित कला को जीवनोपयोगी सिद्ध किया गया है। यदि आप सब भी लाखों मुमुक्षु साधर्मियों की तरह अपने कल्याण का मार्ग प्रशस्त करना चाहते हैं, तो एक बार अवश्य पधारें... गुरु कहान कला संग्रहालय, सोनगढ.

वैराग्य वर्षा

Shree Kundkund-Kahan Parmarthik Trust
302, Krishna Kunj, V. L. Mehta Marg, Vile Parle (West), Mumbai - 400 056. INDIA.
Tel. No.: +91 75068 27160
info@vitragvani.com www.vitragvani.com vitragvanee /c/vitragvanii

Guru Kahan Art Museum App

GURU KAHAN ART MUSEUM
Guru Kahan Art Museum, Shree Digambar Jain Swadhyay Mandir Campus,
Songadh, Tah. Sihor, 364250. Gujarat, India.
info@gurukahanmuseum.org gurukahanmuseum.org +918209571103
gurukahanmuseum Vitragvani_GKAMS /c/gurukahanartmuseum

9 789381 057551